फरीदाबाद
मजदूर समाचार

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा

नई सीरीज नम्बर 81 मार्च 1995

इस अंक में

वर्तमान में भविष्य की फैक्ट्री

दिन ब दिन मैनेजमेंटें मजदूरों से अधिकाधिक घबरा रही हैं। मजदूरों को अपनी मुट्ठी में रखने के लिये डराने-धमकाने-लालच देने के मैनेजमेंटों के तरीके तो नाकारा हो ही रहे हैं, वरकरों में से बीस–पचास तेज-तर्रार लोगों को लीडर - वीडर के नाम पर छुट्टा छोड़ मजदूरों को जकड़े रखने की मैनेजमेंटों की स्कीम भी लड़खड़ाने लगी है। लीडर और दल्ला शब्द को एक ही अर्थ में इस्तेमाल करते, पर्यायवाची के तौर पर प्रयोग करते बढ़ती संख्या में वरकर छोटे-छोटे सामूहिक कदम अधिकाधिक उठा रहे हैं। और **मजदूरों द्वारा प्रतिनिधि-लीडर-अगुआ को नकारने का मतलब है ऊँच-नीच वाली सीढ़ीनुमा व्यवस्था की टेक को हटा देना।** ऐसे में मजदूरों पर कन्ट्रोल बनाये रखने के लिये हाथ-पैर मार रही भयभीत मैनेजमेंटों द्वारा जिस भविष्य की फैक्ट्री की रचना की जा रही है उसके मॉडल अमरीका में कार्य भी करने लगे हैं। मैनेजमेंटों के प्रमुख अखबार वॉल स्ट्रीट जर्नल की इस सम्बन्ध में रिपोर्ट को अमरीका में प्रकाशित एक छोटे अखबार चैलेन्ज ने अपने 11 जनवरी 95 के अंक में छापा है और नीचे दी जा रही जानकारी हमने उससे ली है।

कन्ट्रोल-नियन्त्रण-मुट्ठी में रखना और रफ्तार-स्पीड-गति साहबों के प्रिय शब्द हैं। इस सिलसिले में घड़ी लिये घूरते फोरमैन दूध पीते बच्चे हैं फोन, कम्प्यूटर और कैमरों के सामने। भविष्य की फैक्ट्री के मॉडल में इनका तो बोलबाला है ही, सुपरवाइजर - मैनेजर की जगह भी खूब हिसाब लगा कर तय की जा रही हैं।

अमरीका में मेरीलैंड प्रान्त के हैगर्सटाउन नगर स्थित भविष्य की फैक्ट्री, इलेक्ट्रोनिक बैंकिंग सिस्टम में लम्बी कतारों में छोटे-छोटे डैस्कों पर महिलायें लिफाफे खोलती हैं, उनकी सामग्री को तरतीब से रखती हैं और कन्ट्रोल कार्ड भरती हैं जो यह रिकार्ड करते हैं कि कितने पत्र उन्होंने खोले हैं और कितना समय उन्होंने लिया है। इन वरकरों को प्रति मिनट तीन लिफाफों को निपटाना पड़ता है। और इनके निकट अन्य महिलायें इलेक्ट्रोनिक की- बोर्ड पर इस रफ्तार से उँगलियाँ चलाती हैं कि प्रति घन्टे 8,500 अक्षरों के निर्धारित कोटा को पूरा कर सकें।

कार्यस्थल विशाल क्लास रूमों की तरह हैं। डैस्कों के मुँह सामने की ओर हैं जहाँ उठे प्लेटफार्म से एक मैनेजर घूरता रहता है। सुपरवाइजरों की पोजीशन कमरों में पीछे रहती है। एक बड़े साहब फरमाते हैं, "अगर आप मजदूरों पर पूरी निगाह रखना चाहते हैं तो पीछे से यह करना चाहिये क्योंकि तब वरकर को पता नहीं रहता कि उसे आप देख रहे हैं या नहीं।"

छतों से काले गोले लटके हैं जिनमें कैमरे लगे हैं। वड़े साहब के सामने एक टी वी मॉनिटर है जिस पर फैक्ट्री में जगह-जगह रखे आठ कैमरों से तस्वीरें आती रहती हैं। सुपरवाइजरों और मैनेजरों पर भी वड़े बॉस की हर समय नजर रहती है। किसी मजदूर के डैस्क पर रखे डाक्यूमेंट को पढने के लिये बॉस रिमोट कन्ट्रोल से कैमरे को वहाँ केन्द्रित करता है और देखता है कि वरकर कैसे काम करती है।

बड़े साहब की विशाल टेबल हर वरकर द्वारा किये कार्य के सटीक कम्प्यूटर आँकड़ों से पटी रहती है। अगर कोई मजदूर कोई गलती करती है तो कम्प्यूटर ध्वनि करता है और स्क्रीन पर गलती ठीक करने का आदेश चमक उठता है।

सख्त नियम है कि कार्य से असम्बन्धित कोई बात न की जाये। और खिड़कियाँ बन्द रखने का कारण एक बड़े साहब समझाते हैं, "मैं नहीं चाहता कि वे बाहर देखें। खुली खिड़कियों से मजदूरों का ध्यान बँटता है और वे गलतियाँ कर देंगी।"

लन्च से पहले और बाद में कोई ब्रेक नहीं है। डैस्कों पर चाय-काफी पीने की इजाजत नहीं है। मीठी गोलियों के अलावा और कोई खाने की चीज पास रखने पर पाबन्दी है।

घुटन लन्च के समय फूट पड़ती है। मजदूर बिना रुके बात करती रहती हैं। कई तो लन्च में शायद ही कुछ खाती हैं क्योंकि चबाते समय बात नहीं कर सकती। सुश्री सिन्डी कहती हैं कि इन कबूतरखानों में भी सिर न घुमाओ और मुँह के कोने से बोलो तो आमतौर पर सुपरवाइजर सुन नहीं पाते।

घबराई-पगलाई मैनेजमेंटें अत्यधिक कार्यभार और चौतरफा खुफियागिरी की ओर अग्रसर हैं। मैनेजमेंटों द्वारा पैदा किया जा रहा अधिकाधिक शत्रुतापूर्ण माहौल मजदूरों को अजीबोगरीब बीमारियाँ दे रहा है। सुश्री कैरोल स्मिथ नीन्द में हाथों से लिफाफे खोलने की क्रियायें करती हैं और रात में अचानक उठ जाती हैं।

और पिंजड़ों में तीव्र गति से कार्य करने के लिये वेतन इतना है कि सुश्री बारबारा को खर्च चलाने के वास्ते आठ घन्टे की ड्यूटी के बाद पार्ट टाइम काम करने पड़ते हैं।■

बुजुर्गों का महत्व

... हम भी यहां पर एक मासिक बैठक खुले रूप में करते हैं। इसमें सांस्कृतिक क्षेत्र में ये मुद्दे उठाये गये। ग्रामीण समाज से ही औद्योगिक मजदूर जाता है। अनकहे भी हम लोगों के मानस पर कुछ सवाल इस तरह अंकित हैं कि उनको खुर्चे बिना नया कुछ जमता नहीं है। 19,20 और 21 को फ म स पर चर्चा करने की बात ही सार्थक विधि है। यही तो शिक्षा का सही रूप है – पद्धति है। परन्तु यह भी सच है कि बंधु लोग उदासीनता दिखाते हैं। ऐसे अवसर पर आते नहीं। आपके करीब बस्ती में कुछ ऐसे बूढ़ों या बुढ़ियों का निवास अवश्य होगा जो रिटायर्ड श्रेणी में हों। इनको मिलकर आइयेगा और निमन्त्रित भी कीजियेगा। लाइब्रेरी में आयेंगे तो फ म स पर चर्चा की भावना से ही आयेंगे। चर्चा की पहल भी यही करें। बोलने के दौर चलाये जायें। पहले पाँच-सात मिनट में आप विषय को चर्चा के लिए रख दें और फिर उनको बोलने दें। अपने नम्बर पर फिर आप भी अपना दृष्टिकोण रखें। ये लोग खुद ही फिर दूसरों से जिक्र करेंगे। इनको अवकाश है। अवसर आप देंगे। इनके पास बताने के लिए यह विषय रहेगा। अगर इनको सक्रिय किया जा सका तो महत्वपूर्ण उपलब्धि रहेगी। ... पहले पचास साल की अवस्था से ऊपर के लोगों से ही शुरु कीजियेगा। औरत हो या मर्द। इनके माध्यम से बात भी लोगों में जायेगी और ये ही दूसरों को भी लाइब्रेरी तक लायेंगे।

इस आमने-सामने बैठकर होने वाली चर्चा में फ म स में उठाये मुद्दों पर प्रतिक्रिया ये देंगे। इससे विषय में गहनता आयेगी। जो भी फ म स में छपा, उसका उद्देश्य ये कहां तक पकड़ते हैं? यह तो पाठकों को बदलने की प्रेरणा देता है। मौजूदा सोच से ही आगे बढ़ने का ढंग करना होगा। इस चर्चा के माध्यम से ही फ म स जीवन्त पत्रिका बनकर उभरेगी। प्रायः पाठक इसे भी समाचार पत्र की तरह ही पढ़ते होंगे। प्रायः लोग छात्रों और जवानों से शुरु करते हैं। मेरे अपने अनुभव के अनुसार वृद्धों से शुरु करना कुछ अधिक सुफलदायक और सार्थक होता है। पहले सत्तर साल की अवस्था पार कर चुके लोगों से मिलना होगा। इनकी संख्या बहुत ही कम हो सकती है तो साठ साल से ऊपर वालों की ही सूची बना लीजियेगा। हर ऐसे औरत-मर्द के पास एक-एक बार तो जाना ही होगा। इन तक फ म स अवश्य पहुंचाया जाये। ... इनके साथ चर्चा से विषयवस्तु और भाषा तथा अभिव्यक्ति की शैली में भी फ म स समृद्ध होगा। हमारा अनुभव है कि ये प्रौढ़ और वृद्ध ज्यादा कुछ कर पाते हैं। इनका प्रभाव भी होता है; और इनके सम्पर्क में आने से अपने में विनम्रता का विकास होता है। हर माह की 19,20 और 21 को सप्रयास कामयाब करना होगा। बस, प्रकाशित फ म स की उपयोगिता, सार्थकता और उद्देश्य पर ही, प्रकाशित हर मुद्दे, आलेख, समाचार आदि पर ही क्रमवार चर्चा करनी है। इनकी राय होगी और प्रश्न भी। इनके आधार पर भावी अंक का प्रकाशन रहेगा।

20.1.95 – राजबल, जोया, मुरादाबाद

कानपुर से ठेकेदारी मजदूर का खत

आपने जो नारा दिया है अपने पेपर में कि दुनियाँ को बदलने के लिये मजदूरों को खुद को बदलना होगा, इस नारे के तहत हम आपसे थोड़ी बहस करना चाहते हैं और कुछ सीखना चाहते हैं। हम सबसे पहले अपना परिचय आपको दे दें... हम एक ठेका मजदूर हैं। हमने अपनी नौकरी पक्की करने हेतु, यानि ठेकेदारी प्रथा समाप्त करने के लिये जो संघर्ष चलाया वह संघर्ष निम्न प्रकार की यूनियनों में रह कर चलाया। ठेकेदारी प्रथा के तहत 1978 में हमारी नौकरी लगी। तब कानपुर में पहली यूनियन में जाने के रूप में हम इंटक की यूनियन में शामिल हुये। लेकिन चन्द दिनों में देखा कि वह यूनियन मैनेजमेंट के साथ लड़ती नहीं है और मजदूरों के साथ गद्दारी करती है। तब हम एक स्वतन्त्र विचारधारा की यूनियन में आये जिसका नाम RTSS है। उनके नेता थे अहमद हुसैन। उन्होंने आन्दोलन चालू किया। तब उनकी यूनियन कानपुर में नई थी और उन्होंने क्रान्तिकारी कदम उठाकर मजदूर आन्दोलन की अगुआई की। उस आन्दोलन में सामुहिकता थी। बुद्धिजीवी भी थे और क्रान्तिकारी लोग थे और लड़ने की भावना थी। तब वह यूनियन स्वच्छ थी और उसमें ईमानदार लोग थे। तब वह कानपुर के ठेका मजदूरों को कुछ दिला सकी। वह यूनियन का तूफानी दौर था। शासक वर्ग और सरकार दोनों की चूलें हिल गई थी। कानपुर के शासक और मिल मालिक घबरा गये तब उनके पिट्ठू लोग जो अपने को बुद्धिजीवी कहते हैं वह मिल मालिकों और शासक वर्ग की गोद में खेलने लगे। उन लोगों ने अपनी बुद्धी से काम लेकर मजदूरों में भटकाव पैदा कर दिया। नेतृत्व भ्रष्ट होता गया और प्रोजेक्ट की नीति अपना कर सेवायोजकों से धन पैदा करने लगा। तब [illegible] संगठन की कानपुर में एक धाक थी, जो मजदूर एकता थी वह इन मजदूर-विरोधी लोगों की बात में आ कर और भटक गई। यहीं से शुरु होता है संगठन का विखराव जो कानपुर के लिये और मजदूर आन्दोलन के लिये खतरनाक साबित हुआ। मगर उस संगठन में जो क्रान्तिकारी भावना थी वह जारी रही हालांकि नेताओं ने डर कर वर्ग संघर्ष छोड़ स्वार्थी रूप अपना लिया था और जो पैसा मजदूरों की मेम्बरी एवं चन्दे से आता था उसे न संगठन के काम के लिये और न मजदूर आन्दोलन के लिये लगाया बल्कि स्वयं अपनी एय्याशी में लगा दिया। नेताओं ने ठेका मजदूरों एवं क्रान्ति की भावना वाले बुद्धिजीवियों को दबाने की कोशिश की। तब क्रान्ति की भावना से लैस करने एवं मजदूर वर्ग के आन्दोलन को बढाने के लिये एक नया संगठन, कपड़ा मिल मजदूर यूनियन नाम से बना लिया गया। मगर यह यूनियन थोड़े दिन तो संघर्ष में रही और इसके बाद यहाँ भी बिखराव शुरु हो गया। तब फिर ठेका मजदूरों का शोषण शुरु हो गया। एन टी सी मिलों से सारे ठेका मजदूर बाहर कर दिये गये। यह बात उस समय की है जब 24.4.90 को एक राजाज्ञा निकाल राज्य सरकार ने सारी मिलों से ठेकेदारों के लाइसेंस रद्द कर दिये थे, ठेका प्रथा एबालिश कर दी थी। इसके बाद विभिन्न यूनियनों ने आंदोलन किये मगर ठेका श्रमिकों को स्थाई नहीं करा सकी और एन टी सी एवं बी आई सी मिलों के तमाम ठेकेदारी मजदूरों को बाहर कर दिया गया, कोई यूनियन इन मजदूरों को नहीं बचा सकी। आज तो मजदूर वर्ग के सामने एक समस्या पैदा हो गई है कि स्वयं नेतृत्व की कमान सम्भाल ले, किसी पर भरोसा नहीं करे। आज दुनियाँ को बदलने के लिये मजदूर और किसानों के नौजवानों को बदलना होगा। व्यवस्था परिवर्तन के लिये नई तकनीक ढूँढनी पड़ेगी। मैं आपसे प्रभावित हुआ हूँ। आप मजदूर आन्दोलन को चलाने एवं आगे बढाने के लिये नई सोच का इजाद कर मजदूर आन्दोलन को सहयोग करें। मैं आपकी प्रति के लिये प्रति महीने मात्र पाँच रुपये का सहयोग कर सकता हूँ और कानपुर के सूती उद्योगों को पूरी क्षमता से चलाने एवं ठेका मजदूरों को कम्पनी का स्थाई श्रमिक मनवाने के लिये संघर्षशील हूँ। जब तक ठेका मजदूरों को न्याय नहीं मिलता एवं जब तक मजदूर सत्ता कायम नहीं होती तब तक मैं संघर्ष में अहम भूमिका निभाऊँगा। मैं आपकी पत्रिका में यह लेख छपवाना चाहता हूँ मगर छापने के लिये कोई नया नाम लिख देना ...

20.2.95 – आराम सिंह, कानपुर

किसान भी करते हैं नाइंसाफी मजदूरों के साथ

अब से लगभग तीन महीने पहले बहराइच में हमारे गाँव से मैं काम की तलाश में अपने कुछ साथियों सहित दिल्ली के लिये चला। मुरादाबाद रेलवे स्टेशन पर मैं किसी कारणवश गाड़ी से उतरा। दुर्भाग्यवश गाड़ी चल पड़ी और मैं वहीं रह गया। मेरा सारा सामान और साथी मुझसे निकल चुके थे। वहीं पर से एक जाट कौम का आदमी मुझे अपने गाँव यह कह कर ले आया कि हम तुमको काम देगा और 500 रुपये एक महीना का देगा। उस चौधरी महिन्दर सिंह के वहाँ हमने लगभग तीन महीने काम किया। हमने वहाँ 8-10 घँटे काम घड़ी देख कर नहीं किया बल्कि सुबह-सुबह रात की बासी रोटियाँ खा कर काम के लिये खेत में ईख काटने चला जाता था। शाम को खेत से आ कर रात 8-9 तक काम करता फिर रात को ट्यूबवैल पर ड्यूटी देनी भी होती थी। यह काम केवल मैं ही नहीं करता था वरन मेरी जानकारी के अनुसार सारे गाँव के जाटों के यहाँ बिहार राज्य और यू पी. के देवरिया, बहराइच, गौंडा, बस्ती जिलों के सभी मजदूरों को यह काम करना पड़ता था। न करने पर गाली, थप्पड़ और डंडे मार कर भगा दिया जाता है। खाने में, मजदूर और मालिक में, बहुत अन्तर होता। कपड़ों में एक अंगोछा और कुर्ता।

हमने कई बार कहा कि हमारे गाँव खत डाल दिया जाये और हमारे पैसे हमारे घरवालों के पास पहुँचा दो लेकिन ये लोग अपना काम देखते, दूसरों का दुख-दर्द नहीं। आज हम अपने घर जा रहे हैं। हमें खुशी है इस गाँव के चौधरियों की कलई खोलते हुये जो मजदूरों, अपने नौकरों के प्रति दुर्व्यवहार करते हैं। मैं जानता हूँ कि इस गाँव में एक लम्बरदार के घर एक आदमी रहता है जो गूँगा है। मैं जानता हूँ वह अपने घर कभी नहीं जायेगा और न ही कभी पैसे की फरमाइश करेगा। सारी जिन्दगी इस लम्बरदार की खिदमत में गुजार देगा वो। अरे अभी कुछ दिन पहले ही एक पागल नौजवान लड़के से बराबरवाले पटेदार ने गन्ना मार - मार कर मुफ्त में कई दिन काम करवाया और जब उसे बुखार आया तो पीट कर भगा दिया।

अब तीन माह बाद हम अपने घर जा रहे हैं। क्या ले कर जा रहे हैं? यह देखो, गिन कर पूरे 350 हैं तीन महीने के जबकि उस बाबू ने मुझे 1500 रुपये देने थे क्योंकि उसने मुझे 500 रुपये महीने देने का वादा किया था। 300 किराये में खर्च हो जायेंगे। बाकी खाने-पीने में। हम क्या मुँह दिखायेंगे अपने घरवालों को? न जाने हमारे माँ-बाप मरे हैं या इलाज माँग रहे हैं। आज हम खुश हैं अपने घर जा रहे हैं और दुखी हैं कि अपने माँ-बाप को कुछ ले कर नहीं जा रहे। 1.2.95 – मुंहम्मद हुसैन S/o श्री गुलाम अली शेख पोस्ट व गाँव – नरायनपुर कलाँ, जिला – बहराइच (उ.प्र.)

हितकारी पोट्रीज

63-64 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित प्याली फैक्ट्री में व्यवस्था का नजारा इस कदर खराब है कि वर्षा के समय जितनी बारिश बाहर होती है उतनी ही अन्दर। फैक्ट्री में कीचड़ और पानी इतना फैल जाता है कि कहीं भी आने-जाने के लिये अगला पाँव रखने के लिये सोचना पड़ता है।

जिस फैक्ट्री के प्रति महीना तैयार माल का सेल ढाई करोड़ रुपये है उस फैक्ट्री के मजदूर के बच्चे को मास्टर फीस लाने के लिये वापस कर देता है क्योंकि प्याली में कभी भी समय पर तनखा नहीं दी जाती। घर में आटा नहीं रहता।

फैक्ट्री के शेड सब इतने खराब हैं कि 13.2.95 की शाम को 4 बजे एक बन्दर उछलता-कूदता आ रहा था शेड पर से उससे एक चादर टूट कर गिरी और तीन मजदूरों को घायल कर दिया। ई एस आई ले जाने के लिये एम्बुलेन्स घायल मजदूरों को नहीं दी गई। एम्बुलेन्स वी आई पी इस्तेमाल करते हैं। उस समय सभी उच्च अधिकारी अपने-अपने सैलून में बिराजमान थे पर किसी ने अपनी गाड़ी नहीं दी और न पैसा दिया। सड़क से आटोरिक्शा लाया गया पर उसको किराया देने के लिये हितकारी मैनेजमेंट के पास पैसा नहीं था। मिस्टर विवेक कपूर इंजीनियर ने अपनी जेब से 100 रुपये दिये तब घायल मजदूरों को ई एस आई अस्पताल पहुँचाया गया। एक मजदूर की हालत इतनी नाजुक थी कि उसे उसी समय सफदरजंग अस्पताल दिल्ली के लिये रेफर कर दिया गया।

19.2.95 – हितकारी पोट्रीज का एक मजदूर

मजदूरों की आवाज

कर ली है फरियाद सब जगह इस भजन लाल सरकार मैं
कहें कसम से बहुत दुखी हम काँग्रेस के इन भेड़ियों के राज मैं।
दी कानून बनाय सभी रगुलर वहीं होजा
सेवा नियमत करो उसी की पाँच साल जिसको होजा।
10 और 15 साल हुये हम वन विभाग रुजगार मैं
चार महीने हमको हो गये तनखा तक का नाम नहीं।
DFO और गार्ड रेन्जर सही करैं कोई काम नहीं
बजट हमारा खा गये सारा दारू-रोटी-दार मैं।

वखान : आप-वीती का, वातचीत में (3)

8x10 की एक झुग्गी जिसमें एक दरवाजे के अलावा हवा तथा रोशनी के लिए खिड़की तथा रोशनदान तो क्या छोटा सा छेद भी नहीं है। दरवाजा बंद करने पर घुटन होती है। बारिश के पानी से बचने के लिए छप्पर के ऊपर प्लास्टिक है। फूस की कमी से फूस कम और प्लास्टिक अधिक दिखाई देता है। झुग्गी की एक साइड में एक चारपाई बिछी है। दूसरी तरफ एक कोने से दूसरे कोने तक बंधी रस्सी पर इसमें रहने वाले मजदूरों के कपड़े लटके हैं। झुग्गी के एक कोने में रसोई का सामान और दूसरे कोने में कुछ किताबें रखी हैं। दरवाजे के आगे एक संकरी गली है जो आंगन का भी काम देती है। बार-बार कमरा बदलने की दिक्कत से बचने के लिए दो मजदूरों ने मिलकर यह झुग्गी 8000 में मोल ली है। इस झुग्गी बस्ती में इस तरह की हजारों झुग्गियाँ हैं। इस झुग्गी में पाँच लोग रहते हैं। एक मजदूर कमला सिन्टैक्स में काम करता है, एक कटिंग का काम करता है और तीन मजदूर अन्य फैक्ट्रियों में बतौर केजुअल काम करते हैं। इन पाँचों की पत्नियाँ व बच्चे यहाँ से एक हजार मील दूर गाँवों में रहते हैं। कमला सिन्टैक्स के वरकर से पहले दो बार हमारी बातचीत हो चुकी थी। तीसरी बार हमने उनकी झुग्गी में ही बातचीत की। जब हम वहाँ पहुँचे तब झुग्गी का दरवाजा बन्द था और हमारे अन्दर जाते ही फिर बन्द कर दिया गया। बातचीत के दौरान अन्य बाशिन्दे अपने काम से बार-बार अन्दर-बाहर आते-जाते रहे और सामने की एक झुग्गी में एक आदमी उसी दिन नौकरी छूट जाने पर अपने जवान बेटे को गुस्से में जोर-जोर से डाँट रहा था। पहले थोड़ा-बहुत इधर-उधर की बातें हुई और बाद में हमारी बातचीत कमला सिन्टैक्स के मजदूर की बातों में सिमट गई।

मैं नौकरी अपने व अपने बच्चों के भरण-पोषण तथा सुख-सुविधाओं के लिए करता हूँ। दिनों-दिन बढ़ती महंगाई के कारण नौकरी से गुजारा न हो पाना तथा सुविधाओं का पूरा होना मुझे कठिन लगता है। जिन्दगी में कई मजबूरियाँ हैं। अपनी मजबूरियों को कम करने के लिए मैं नौकरी करता हूँ।

जो काम आप फैक्ट्री में करते हैं वह आपको कैसा लगता है?

जो काम मैं कम्पनी में करता हूँ वह कलात्मक है। शुरु-शुरु में मुझे यह काम बहुत अच्छा और रुचिकर लगता था परन्तु अब यही काम मुझे दिमागी तौर पर बहुत बोझिल लगता है। ड्यूटी पर चढ़ते ही पहले अपनी मशीन पर काम कर रहे मजदूर को छुड़ाने की फिक्र रहती है और छुट्टी होने पर मुझे अपने को छुड़ाने वाले मजदूर का इन्तजार करना पड़ता है। मशीन एक मिनट के लिए भी बन्द नहीं होनी चाहिए। चाहे लंच हो, चाय का समय हो, बीड़ी पीनी हो या पेशाब जाना हो, मशीन लगातार चलती रहनी चाहिए। इन आवश्यक कार्यों के लिए हमें कोई रिलीवर नहीं मिलता। मैं लंच तभी कर सकता हूँ, चाय तथा बीड़ी तभी पी सकता हूँ, पेशाब करने तभी जा सकता हूँ जब मेरे पास की मशीन का मजदूर मेरी मशीन का भी काम सम्भाल ले। बदले में मुझे भी उसकी मशीन का काम सम्भालना पड़ता है ताकि वह भी इन आवश्यक कार्यों को कर सके। कभी-कभी मेरी मशीन पर काम करने वाले दूसरी व तीसरी शिफ्ट के वरकर ड्यूटी पर नहीं आ पाते, ऐसे में मुझे 24 घण्टे की ड्यूटी करनी पड़ती है।

आपकी फैक्ट्री में माहौल कैसा है?

हमारी फैक्ट्री का माहौल ठीक नहीं है। फैक्ट्री के अन्दर बहुत गर्मी है। स्टीम के कारण 200 डिग्री टैम्परेचर रहता है। कपड़ा सुखाने के लिए इतनी गर्मी जरूरी है। सर्दी के दिनों में भी काम करते समय हमें पसीना आता है। गर्मियों में तो हालत खराब हो जाती है। इस विकट गर्मी से बचने के लिए एक भी पंखा, कूलर व ऑगजेस्ट फैन नहीं है। कैन्टीन में खाना ढंग से नहीं मिलता है। हमारी फैक्ट्री में 1200 मजदूर काम करते हैं जबकि कैन्टीन में कुल तीन-चार बेंचें - टेबलें हैं। कॉउन्टर एक ही है। कैन्टीन रूम बहुत छोटा है। कॉउन्टर पर खाना लेते समय बहुत अधिक भीड़ हो जाती है। आपस में धक्का-मुक्की होती है जिससे किसी के ऊपर गरम-गरम दाल गिरती है तो किसी के ऊपर गरम-गरम सब्जी। गरम दाल, सब्जी, कढी से शरीर के ऊपर बिखरने से थोड़ा-बहुत जलन तो होती है पर कभी-कभार अच्छा-खासा मेकअप भी बन जाता है। ऐसे में बहुत से मजदूर भूखे रह जाते हैं। मैं भी कई दिन भूखा रह जाता हूँ। और ये देखो मेरे हाथ, इन पर बने जो छोटे-बड़े निशान आपको दिखाई दे रहे हैं ये निशान मशीन पर काम करते समय लगी चोटों के हैं। फैक्ट्री में ऊँगली कटना कोई बड़ी बात नहीं है। कभी-कभी तो गम्भीर दुर्घटनाएं हो जाती हैं। अभी हाल ही में कमला सिन्टैक्स में काम करते हुए दो मजदूरों की मौत हो गई। एक मजदूर रोटरी प्रिंटिंग कलर रूम में काम करता था। रात 12 बजे से 8 बजे की ड्यूटी में सुबह पौने आठ बजे उसे इलेक्ट्रिक शॉक लगा। उसका सारा शरीर काला पड़ गया और वह बेहोश हो गया। उसे 8 सैक्टर ई एस आई अस्पताल ले गये। वहाँ उसका इलाज शुरु करने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। नाइट शिफ्ट और सुबह की शिफ्ट के सब वरकर ई एस आई गये। सैकन्ड शिफ्ट के जिन मजदूरों को पता चला वे भी वहाँ पहुँचे। उस दिन तीनों शिफ्टों के मजदूरों ने काम नहीं किया। दूसरी दुर्घटना बॉयलर पर काम कर रहे एक मजदूर के साथ हुई। वह मजदूर कमला सिन्टैक्स में उसी दिन बतौर केजुअल लगा था। एक सड़े कमजोर फट्टे पर खड़ा होकर वह काम कर रहा था। अचानक फट्टा टूट गया और वह मजदूर बॉयलर के उबलते पानी में गिर पड़ा। उसे गिरते हुए एक इंजीनियर साहब ने देखा। वे मौके पर वहां पहुँचे और उस मजदूर को बाहर निकाला। वह बुरी तरह जल चुका था। उसके शरीर की चमड़ी कई जगह से उधड़ रही थी और वह मर गया। मैनेजमेंट ने फटा-फट उस मजदूर का ई एस आई कार्ड व अन्य कागजातों की खानापूर्ति कर और उस मजदूर के परिवार वालों को 70-75 हजार रुपये देकर मामला रफा-दफा किया। उस दिन भी तीनों शिफ्टों के मजदूरों ने काम नहीं किया।

फैक्ट्री स्तर पर आप लोगों ने कैसे-कैसे विरोध किए हैं?

हमारी फैक्ट्री 1982 में खुली। शुरु में इसमें पूरा काम ठेकेदारों के मजदूरों से करवाया जाता था। जो भी मजदूर ठेकेदारों का विरोध करता ठेकेदारों के गुंडे उसकी पिटाई कर देते। ठेकेदारों द्वारा पिटाई के खिलाफ मजदूरों का गुस्सा बढ़ता गया। आखिर मजदूरों ने मैनेजमेंट और ठेकेदारों की पिटाई की और ठेकेदारी प्रथा खत्म करवा कर ही थोड़ा चैन की साँस ली। फिर मजदूरों में परमानेन्ट होने की सुगबुगाहट होने लगी। इसके लिए आवाज उठानी आरम्भ की। पहले 80 मजदूर परमानेन्ट थे। 4.7.89 को 350 मजदूर और परमानेंट हुए। और आज इस फैक्ट्री में 760 परमानेंट मजदूर काम करते हैं। परन्तु आज भी 80-90 ऐसे वरकर हैं जिन्हें केजुअल में काम करते 4-5 साल हो गये हैं। सिंगल ओवर टाइम के खिलाफ मजदूरों में खुसर-फुसर और थोड़ी-बहुत हलचल होती रहती है। लीडरों और मैनेजमेंट की नेगोसिएशन का यह मुद्दा भी बन चुका है। इसमें मैनेजमेंट ने हमारे 25 केजुअल साथियों को परमानेंट करने का आश्वासन दिया और 10 रुपये के बदले अब 12 रुपये ओवर टाइम में चाय-पानी के मिलते हैं।

अन्य फैक्ट्री के मजदूरों द्वारा मैनेजमेंटों के विरोध में भी हम शामिल हुए हैं। सैक्टर 4 में कोटूस और सैक्टर 7 में नागपाल इडस्ट्रीज के मजदूरों द्वारा छँटनी और न्यूनतम वेतन न देने के खिलाफ मैनेजमेंटों के विरोधों में हमने हिस्सा लिया। ■

साहनी सिल्क

350 परमानेन्ट, 100 ठेकेदारों के और 65 केजुअल वरकर हैं लेकिन सब मजदूरों के लिये 12 घन्टे की ड्यूटी कम्पलसरी है। ओवर टाइम सिंगल रेट से है पर उसके पैसे भी कभी टाइम पर नहीं। दिसम्बर 94 का ओवर टाइम का पैसा पहली फरवरी 95 तक नहीं दिया गया।

13/7 मथुरा रोड़ स्थित साहनी सिल्क के मजदूरों ने ओवर टाइम पेमेन्ट टाइम पर और सरकारी कानून के अनुसार डबल रेट से देने की डिमान्ड की। इस सम्बन्ध में वरकर 25, 27 और 30 जनवरी को मैनेजमेंट से मिले। मैनेजमेंट ने 31 जनवरी को दिसम्बर का ओवर टाइम देने का आश्वासन दिया। पहली फरवरी को 4 बजे तक मैनेजमेंट द्वारा पेमेन्ट नहीं करने पर फस्ट शिफ्ट के वरकरों ने ओवर टाइम काम करने से इनकार कर दिया और ड्यूटी खत्म होने पर फैक्ट्री से चले गये। सैकेन्ड शिफ्ट के मजदूर 4 बजे से काम कर रहे थे कि 6 बजे पुलिस ने मार-पीट कर उन्हें फैक्ट्री से निकाल दिया और मैनेजमेंट ने ताला लगा दिया।

मैनेजमेंट अदालत से मजदूरों के खिलाफ 200 गज वाला स्टे ले आई है और पुलिस की मदद से फैक्ट्री से माल निकाल रही है। 24 फरवरी को भी साहनी सिल्क वरकर फैक्ट्री गेट से 200 गज दूर टोलियों में बैठे थे। ■

परियावरन बनाया सुन्दर करके महनत मजदूरी
रहे काटते गला हमारा नहीं हाजरी दी पूरी
बिन रोटी के बच्चे भूखे खुसी नहीं परवार मैं।
DC साहेब गोर करो तुम न्याय उचित हमको दीजो
रोजी रोटी दे कर हमको हरियाने मैं यस लीजो
नाई करैं तो बेसक जइयो तुम भी कुआ भार मैं।।

25.2.95 – डी सी आफिस पर धरने पर बैठे गाँव बहीन, तहसील हथीन, जिला फरीदाबाद के वन विभाग के मजदूर

जय श्री आराम !

सेवा में,

श्रीमान चीफ एग्जेक्यूटिव, झालानी टूल्स I, II, III प्लान्ट, फरीदाबाद।

विषय : तुला राशि से निकलने के लिये नाम बदलने का एफीडेविट।

महोदय,

ज्योतिषी की सलाह पर दक्षिण मुखी गेट बन्द कर पूरब मुखी की जगह आप पाताल मुखी करेंगे तो भी हमें कोई एतराज नहीं है। ज्योतिषी जी के कहे अनुसार एडमिनिस्ट्रेशन बिल्डिंग की तीसरी मंजिल गिराने के संग-संग आप पहली मंजिल गिरायेंगे तो हम तालियाँ बजायेंगे। लेकिन श्रीमान, ज्योतिषी ने तुला राशि वाले वरकरों को नौकरी से निकालने की जो सलाह आपको दी है उसने हमारी नीन्द हराम कर दी है। श्रीमान, विश्व मंडी की वेदी पर मैनेजमेंट द्वारा 1984-85 में हममें से डेढ़ हजार की बलि देने के बाद बचे हम 2200 मजदूरों में तुला राशि वालों की संख्या 1370 है। और श्रीमान, झन्डाधारी लठैतों द्वारा इस्तीफे लिखवाने के लिये फिर मार-पीट शुरु करने की आशंका से हमारी रूह काँप रही है – एक तो इन दस साल में हमारी हड्डियाँ बुढ़िया गई हैं और फिर पव्वे-बोतल भी इस बार ज्यादा होंगे क्योंकि इनके लिये हममें हरेक से हर महीने दस-दस रुपये वसूले जा रहे हैं। ऐसे में श्रीमान, हम अपने बाप-दादा से विरासत में मिली राम पर आस को छोड़ने के लिये एफीडेविट देना जरूरी समझते हैं। हमें उम्मीद है कि राम से पिन्ड छुड़ा कर तुला राशि से छुटकारा पा हम अपनी नौकरी पर लगे ग्रहण से मुक्त हो जायेंगे। इसलिये कम्पनी के रिकार्ड में हमारे नामों में रा के आगे आ लगा कर यह परिवर्तन फौरन करने की कृपा करें –

राम स्नेही की जगह आराम स्नेही, राम निहोर की जगह आराम निहोर, राम बिहारी... आराम बिहारी, रामअवध... आराम अवध, राम सिंह... आराम सिंह, राम भरोसे... आराम भरोसे, राम बलि... आराम बलि, राम दीन... आराम दीन, राम प्रताप... आराम प्रताप, राम कृपाल... आराम कृपाल, राम दुलार... आराम दुलार, राम आसरे... आराम आसरे, राम इकबाल... आराम इकबाल, राम देव... आराम देव, राम करण... आराम करण, राम लाल... आराम लाल, राम वृक्ष... आराम वृक्ष, रामस्वरूप... आराम स्वरूप, राम हित... आराम हित, राम प्यारे... आराम प्यारे, राम धारी... आराम धारी,.........

श्रीमान, हमारे नये नाम उचित भी हैं क्योंकि आराम की आज हर मजदूर को बेहद तलब है। आस-पास के गाँवों से ड्यूटी करने आने वालों के लिये तो यूँ भी 13-14 घन्टे की ड्यूटी और फिर खेत-पशु के काम हैं ही पर फरीदाबाद में गन्दी बस्तियों में रहने के लिये भी ड्यूटी के बाद पार्ट टाइम काम-धन्धे करने को मजबूर हम लोग साँस लेने की फुरसत के लिये तरसते रहते हैं। बेगार करने की मजबूरी में भी हमारे दादे-पड़दादे साल में चार-पाँच महीने काम करते थे, एक फसल और महीनों चलते तीज - त्यौहार थे जबकि हम बारहों महीने खटते हैं और उनसे पचास गुणा ज्यादा प्रोडक्शन करते हैं। इसलिये हम अब राम को इकबाल करने की जगह आराम को इकबाल करते हैं।

श्री आरामचन्द्र की जय!

झालानी टूल्स I, II, III प्लान्टों के 1370 तुला राशि
वरकरों के दस्तखत

वैलफेयर अस्पताल

अक्टूबर 1979 में नीलम फ्लाईओवर के निकट पुलिस फायरिंग में मरे मजदूरों की स्मृति वाले दिवस और स्थल को एस्कोर्ट्स मेडिकल सेन्टर लिमिटेड निगल गई है। पब्लिक वैलफेयर के नाम पर मँहगी जमीन कौड़ियों के भाव हासिल की गई। ऐसे में नियम-कानून कहते हैं कि मरीजों के लिये 20 प्रतिशत बेड फ्री होने चाहियें पर एस्कोर्ट्स मेडिकल में एक भी बिस्तर ऐसा नहीं है। इस अस्पताल में लगा पैसा एस्कोर्ट्स मजदूरों के वैलफेयर फन्ड से है और उन्हें बिल में 25 प्रतिशत कनसेशन है पर एस्कोर्ट्स के जिस भी वरकर को मेडिकल सेन्टर का बिल देना पड़ा है उसने माथा पीटा है।

शुद्ध तौर पर मुनाफे के लिये चलाये जा रहे इस धर्मादे की मैनेजमेंट ने इधर एक इनसैंटिव स्कीम शुरु की है जो मजदूरों के लिये एस्कोर्ट्स मेडिकल सेन्टर के दरवाजे पूरी तरह बन्द कर देगी। हर विभाग के लिये एक न्यूनतम राशि निर्धारित कर मैनेजमेंट ने उससे अधिक आमदनी में डॉक्टरों को हिस्सा-पत्ती का लालच दिया है। मैनेजमेंट की नई स्कीम का एक ही अर्थ है : तकलीफ में जो हैं उनसे ज्यादा से ज्यादा पैसे वसूलना। एस्कोर्ट्स मेडिकल मैनेजमेंट की स्कीम डॉक्टरों से कह रही है कि बिल बढ़ाने के लिये पेशन्टों के आवश्यकता से अधिक टैस्ट करवायें; जरूरत से ज्यादा समय मरीजों को भर्ती रखें; घबराये पेशन्टों की अनावश्यक भर्ती करें।■

सामुहिक कदम

★ तीन फरवरी को सुबह **सपना टैक्सटाइल्स,** 154 सैक्टर-24 में टैक्स प्रिन्ट मशीन पर काम करने वाले ठेकेदार के 25 मजदूरों ने वेतन नहीं देने के विरोध में काम बन्द कर दिया और कैन्टीन में जा कर बैठ गये। डायरेक्टर यू एम जैन जब फैक्ट्री आया और उसे यह पता चला तो आग-बबूला हो वह कैन्टीन पहुँचा और वहाँ बैठे वरकरों को झाड़ने लगा। ईस्ट इंडिया कॉटन के जनरल मैनेजर रहे इस कुख्यात व्यक्ति को मजदूरों ने कुछ नहीं कहा और चुपचाप वहाँ से खिसक कर काम शुरु कर दिया। वरकरों के कैन्टीन से जाते ही परमनल मैनेजर को बुला कर खूब डाँटा गया। और थोड़ी ही देर बाद, टैक्स प्रिन्ट मशीन पर काम करने वाले ठेकेदार के वरकरों को उनकी तनखा दे दी गई। टैक्स प्रिन्ट मजदूरों के इस सामुहिक कदम का यह भी असर पड़ा कि टेबल प्रिंटिंग डिपार्टमेंट में काम करते ठेकेदारों के वरकरों के बकाया वेतन के भुगतान के लिये सपना मैनेजमेंट ने बिल शीघ्र तैयार करवाये।

★ दिल्ली-फरीदाबाद के बीच गाड़ियों में भीड़-भाड़ से परेशान दैनिक यात्रियों ने नई ट्रेनें शुरु करने तथा मौजूदा शटलों में महिलाओं के लिये एक-एक डिब्बा और लगाने की डिमान्ड पूरी करवाने के लिये 3 फरवरी को सुबह फरीदाबाद रेलवे स्टेशन (ओल्ड) पर **रेल यातायात ठप्प** किया। महिलायें और दूसरे यात्री रेल लाइनों पर लेट गये। दोपहर तीन बजे रेलवे लाइनें खाली करवा कर पुलिस ने घन्टों से रुकी खड़ी ट्रेनों को चलवाया।

★ दो साल हो गये हैं फुल पालिश नाम से **झालानी टूल्स सैकेन्ड प्लान्ट** में नया डिपार्ट बनाये पर वहाँ ग्राइन्डिंग का कचरा बाहर फेंकने वाली मशीनें काम नहीं करती और जो नई मशीनें लगी हैं उनमें गर्द को बाहर फेंकने का कोई प्रबन्ध ही नहीं है। इससे गर्दा-कचरा पूरे डिपार्ट में फैलता है और वरकरों के मुँह व नाक में जाता रहता है। तीन मजदूरों के टी बी हो गई है और सात दमे के मरीज बन गये हैं।

फुल पालिश वरकर लीडरों और मैनेजमेंट से अपनी परेशानी बार-बार कह रहे थे पर किसी ने उनकी नहीं सुनी। शनिवार, 4 फरवरी को डे शिफ्ट के वरकर इकट्ठे हो कर फिर फोरमैन से मिले पर उसने हो जायेगा-हो जायेगा कह कर फिर टरका दिया। मजदूरों ने तय किया कि इतवार को कुछ नहीं किया गया तो सोमवार को सुबह काम बन्द करेंगे। सोमवार को हालात जस के तस मिले तो 8 बजे शिफ्ट शुरु होने पर फुल पालिश के 40 मजदूरों ने मशीनें चालू नहीं की। फोरमैन की बात किसी वरकर ने नहीं सुनी। तब शिफ्ट इन्चार्ज ने मजदूरों पर काम शुरु करने के लिये दबाव डाला पर वरकर नहीं माने। एक लीडर ने आ कर मशीनें चलाने को कहा तो उसकी भी वरकरों ने नहीं सुनी। फिर शिफ्ट इन्चार्ज और लीडर ने मिल कर दबाव डाला पर मजदूरों ने काम शुरु नहीं किया। तब जनरल सैक्रेटरी आया और शिफ्ट इन्चार्ज से बात कर उसने हफ्ते-भर में गर्द-कचरे को बाहर फेंकने का प्रबन्ध हो जाने का आश्वासन वरकरों को दिया। इस पर 11 बजे फुल पालिश मजदूरों ने काम शुरु किया। एक फुल पालिश वरकर के शब्द, " सब साथ बात करो, इक्का-दुक्का कोई बोलेगा तो मैनेजमेंट उसे धार पर धर देगी।"

★ वर्क लोड बढ़ाने का विरोध कर रहे पैकरों में से एक के बाद दूसरे पैकर को मैनेजमेंट द्वारा सस्पैन्ड करने पर **बाटा फैक्ट्री** में मजदूरों के बीच दबी जुबान में लगता नारा : **" जो बोले सो निकाल, सत श्री अकाल !"**

★ आश्वासन दर आश्वासन के बावजूद पाँच-छह महीनों से लगातार वेतन में देरी से परेशान हो कर 16 फरवरी को **झालानी टूल्स फस्ट प्लान्ट** के मजदूरों ने समूहों में लीडरों से जनवरी की तनखा के लिए सवाल-जवाब किये।

19 मार्च को सुबह दस बजे, 20 को शाम 5 बजे और 21 मार्च को रात 8 बजे इस अखबार के मार्च अंक पर मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी में चर्चा होगी। हर कोई इसमें भाग ले सकता है।

जो चाहते हैं कि यह अखबार ज्यादा लोग पढ़ें, ऐसे दो हजार मजदूर अगर हर महीने दो-दो रुपये दें तो इस अंक की तरह दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी – 548 नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73